❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यज्ञ संबन्धित जानकारी प्राप्त करने के लिए
7428894020 मिस कॉल करें
thearyasamaj

वर्ष 43, अंक 40 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 31 अगस्त, 2020 से रविवार 6 सितम्बर, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

कोरोना वायरस संक्रमण के बीच दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक सम्पन्न

विद्वानों, भजनोपदेशकों, कार्यकर्ताओं, प्रचारकों के स्वास्थ्य सुरक्षा हेतु लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक रविवार 30 अगस्त 2020 को आर्य समाज हनुमान रोड़ के सभागार में सायं 3 से 6 बजे तक संपन्न हुई। सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी के अस्वस्थ होने के कारण उपस्थित नहीं हो सके। सभा प्रधान जी की अनुपस्थिति के कारण महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य जी का नाम बैठक की अध्यक्षता करने के लिए प्रस्तावित किया, जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। तदुपरान्त गायत्री एवं ईश्वर स्तुति प्रार्थना मंत्रों के सामूहिक उच्चारण के साथ बैठक प्रारंभ हुई। श्री विनय आर्य जी महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने गत अन्तरंग सभा की बैठक के पश्चात् दिवंगत हुए आर्य महानुभावों की सूची पढ़कर सुनाई और सभी ने दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री विनय आर्य जी ने गत अन्तरंग सभा की बैठक की कार्यवाही को उपस्थित सभासदों के समुख प्रस्तुत किया। जिसे सर्वसम्मति से स्वीकारोक्ति दी गई।

ज्ञात हो कि कोरोना संकटकाल में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा मानव सेवा के अनेक कार्य सफलतापूर्वक संचालित किए गए। इस विषम परिस्थिति में विशेष रूप से सभा द्वारा कोरोना आपदा राहत कोष स्थापित किया गया। श्री विनय आर्य जी ने कोरोना आपदा राहत कोष में जमा की गई धन राशि का विवरण देते हुए बताया कि दिल्ली सभा की अपील पर समस्त आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओं और महाशय धर्मपाल जी द्वारा दिए गए 50,00,000 (पचास लाख रुपये) की सहयोग राशि के अनुसार कुल 65,65,803/- रुपए की दानराशि प्राप्त हुई। इस धनराशि से आर्य समाज के भजनोपदेशक, पुरोहित, सेवक, उपदेशकों, इत्यादि महानुभाव जिनके सेवा कार्य कोरोना की वजह से बंद हो गए थे, को सभा की ओर से से सहयोग प्रदान किया गया। सहयोग प्राप्त करने वालों में गुरुकुलों, अनाथालयों के अतिरिक्त आर्य वीर दल-और आर्य वीरांगना दल के गरीब परिवार भी सम्मिलित थे। इसके साथ-साथ सभा के हैल्पलाइन पर प्राप्त हुए निवेदनकर्ताओं को भी आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया। इसके साथ-साथ सभा के कार्यकर्तागण जो लॉक डाउन के समय में सभा कार्यालय आकर निरन्तर कार्य करते रहे उनको को भी सम्मान राशि दी गई। कुल 60 लाख का वितरण इस क्षेत्र में अभी तक किया जा चुका है।

सेवा के इस क्रम में श्री विनय आर्य जी ने संपूर्ण लॉकडाउन के समय दिल्ली की उन समस्त आर्य समाजों का नाम लेकर धन्यवाद किया जिन्होंने विपरीत स्थितियों में मानव सेवा का इतिहास रचा। अपनी-अपनी आर्य समाजों की ओर से 40 और 50 दिनों तक लगातार भोजन, राशन वितरण किया।

महाशय जी द्वारा उदयपुर और टंकारा में नवीनीकरण के लिए अतुलनीय योगदान के लिए धन्यवाद किया गया।

कोरोना के डर को दूर भगाते हुए सभा के अन्तरंग सदस्यों एवं आमंत्रित सदस्यों की उपस्थिति अत्यंत प्रशंसनीय थी। इस अवसर पर धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के सहयोग से श्री अनिल राठौर एवं श्री सुशांत पाधा जो कि आई. एस परीक्षा को उत्तीर्ण कर भारत सरकार द्वारा राष्ट्र सेवा के लिए नामित किए गए हैं उनको सभा द्वारा सम्मानित किया गया और सभी सभासदों ने अपनी शुभकामनाएं और आशीर्वाद प्रदान किया। प्रेम सौहार्द के वातावरण में सभा की कार्यवाही शांतिपाठ के साथ संपन्न हुई।

पारित प्रस्ताव एवं महत्वपूर्ण निर्णय

- ★ **कोरोना काल में आर्यसमाज द्वारा किए गए सेवा कार्यों के लिए अधिकारी एवं कार्यकर्ताओं का किया गया धन्यवाद।**
- ★ **धर्मरक्षा महानिधि की स्थापना - 10 हजार लोगों को जोड़ने का लक्ष्य। प्रत्येक सदस्य ने लिया 50 लोगों को जोड़ने का संकल्प।**
- ★ **21 सितम्बर 2020 से आरम्भ होंगे आर्यसमाजों में साप्ताहिक सत्संग।**
- ★ **आर्यसमाज में चुनाव की प्रक्रिया 30 सितम्बर 2020 से करें आरम्भ।**
- ★ **महाशय धर्मपाल प्रतिभा विकास संस्थान के सफल छात्रों का किया सम्मान।**
- ★ **महाशय धर्मपाल विद्वत्/कार्यकर्ता स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प का शुभारम्भ - आर्यसमाज के विद्वत्वर्ग का समय-समय पर होगा स्वास्थ्य परीक्षण एवं स्वास्थ्य बीमा।**
- ★ **महाशय धर्मपाल आर्ष गुरुकुल विकास संस्थान - आर्ष गुरुकुलों के विकास हेतु दिया जाएगा महाशय धर्मपाल जी द्वारा आर्थिक सहयोग।**
- ★ **वर्ष के अन्त तक 50 प्रचारकों को कार्यक्षेत्र में उतारा जाएगा। आगामी वर्षों में 600 और धर्म प्रचारकों को महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के माध्यम से तैयार किया जाएगा।**
- ★ **लघु एवं प्रेरक पुस्तकों को प्रकाशित करके निःशुल्क वितरण किया जाएगा - महाशय धर्मपाल साहित्य प्रकाशन की होगी स्थापना।**
- ★ **आर्यसमाज की रसोई का होगा शुभारम्भ - प्रतिदिन 1000 लोगों के लिए भोजन बनाने बांटने का होगा कार्य।**
- ★ **आर्यसन्देश टीवी के माध्यम से होगी पारिवारिक यज्ञों की रिकार्डिंग।**
- ★ **प्रत्येक आर्यसमाज करने अपने कार्यकर्ताओं का सम्मान - हर आर्यसमाज के एक सदस्य/कार्यकर्ता का सभा की ओर सम्मान करने की योजना।**

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. प्रणव मुखर्जी का निधन

आर्यसमाज की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि

जन्म :11/12/1933 निधन :31/08/2020

भारत गणराज्य के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. प्रणव मुखजी जी का दिनांक 31 अगस्त, 2020 को 84 वर्ष की आयु में आर्मी हॉस्पीटल, नई दिल्ली में उपराचार के दौरान निधन हो गया। वे कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे तथा अस्पताल में भर्ती थे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ लोदी रोड स्थित शमशानघाट पर किया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसन्देश परिवार एवं समस्त आर्यजगत् की ओर विनम्र श्रद्धांजलि।

महाशय धर्मपाल	सुरेशचन्द्र आर्य	प्रकाश आर्य	धर्मपाल आर्य	विनय आर्य
संरक्षक	प्रधान	मन्त्री	प्रधान	महामन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा			दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा	

आर्य संदेश टीवी
Arya Sandesh TV
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की समय सारणी पृष्ठ 8 पर दी गई है

वेद-स्वाध्याय

सभी ऋतु रमणीय

वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः।
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः शिशिर इन्नु रन्त्यः।। -साम. पू. 6/3/4/2
ऋषिः **वामदेवो गोतमः।।** देवता - **ऋतुः।।** छन्दः **पङ्क्तिः।।**

शब्दार्थ - **वसन्तः** = वसन्त **इत् नु** = निश्चय से ही **रन्त्यः** = रमणीय है और **ग्रीष्मः** = गर्मी की ऋतु भी **इत् नु** = निश्चय से ही **रन्त्यः** = रमणीय है। **वर्षाणि** = वर्षाएँ **अनु शरदः** = उसके पीछे आनेवाले शरद् के दिन और **हेमन्तः** = हेमन्त ऋतु, तथा **शिशिरः** = पतझड़ की ऋतु भी **इत् नु** = निश्चय से **रन्त्यः** = रमणीय है।

विनय - मेरे प्रभु की सृष्टि में सभी ऋतुएँ रमणीय हैं। हर एक ऋतु में अपनी-अपनी रमणीयता है। जो लोग प्रभु के प्रेम को नहीं जानते वे ही हर समय, हर ऋतु में असन्तुष्ट रहते हैं। गर्मी में उन्हें शीत याद आता है, पर शीत आ जाने पर वे कहते हैं, "गर्मी की ऋतु अच्छी होती है।" गर्मकाल में वे प्रतिदिन वर्षा की प्रतीक्षा में रहते हैं, परन्तु वर्षा आने पर वे बरसात से तंग आ जाते हैं। इस प्रकार उन्हें हर समय में शिकायत-ही-शिकायत रहती है। उन्हें कोई भी ऋतु अच्छी नहीं लगती, परन्तु प्रभु प्रेम का कुछ प्रसाद पा लेने पर मुझे तो प्रत्येक ऋतु में अपने प्रभु की ही कोई-न-कोई प्रतिमा दिखाई देती है। इसलिए गर्मी में मैं सुख से गर्मी का आनन्द लेता हूँ और जाड़े में जाड़े का। वर्षाकाल में मैं खूब बरसात मनाता हूँ और पतझड़ में मैं अपने प्रभु का एक-दूसरा ही सौन्दर्य पाता हूँ। इस तरह मैं हर समय हर ऋतु में अपने प्रभु का दर्शन करता हूँ और देखता हूँ कि प्रत्येक ऋतु अपनी नई-नई प्रकार की रमणीयता के साथ नया-नया प्रभु-सन्देश लाती हुई मेरे पास आ रही है।

मेरे जीवनरूपी संवत्सर में भी इसी प्रकार सब ऋतुएँ आया करती हैं। कभी सुख-सम्पत्ति की घड़ियाँ आती हैं तो कभी दुःख-दारिद्रय के लम्बे दिन व्यतीत होते हैं। कभी अति कार्य-व्यग्रता का राजसिक समय वर्षों तक चलता है तो कभी काफी समय के लिए शिथिलता और दीर्घ-सूत्रता के दिनों की बारी आती है, पर मैं उन सभी का रसास्वादन करता हूँ। ये सभी रस अपने-अपने समय पर प्राप्त होते हुए मुझे प्रिय लगते हैं। इस प्रकार मैं अपने बाल्यकाल के वसन्त में खूब खेला हूँ, नौ-जवानी की ग्रीष्म के जोशीले दिनों का तथा प्रौढ़ता की बरसात के प्रेमपूर्ण दिनों का आनन्द भी मुझे याद है। आजकल सार्वजनिक जीवन की शरद् और हेमन्त की बहार ले रहा हूँ और देख रहा हूँ कि वार्धक्य की शिशिर अपनी बुजुर्गो, अनुभवपूर्णता और परिपक्वता स्वर्गीय आनन्द के साथ मेरी प्रतीक्षा कर रही है। निःसन्देह प्रभु की वसन्त ही नहीं किन्तु ग्रीष्म भी रमणीय है, वर्षा और इसके अनन्तर आनेवाली शरद् के साथ उसकी हेमन्त तथा शिशिर भी उसी तरह रमणीय हैं।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

बॉलीवुड में फैलते नशे के खिलाफ जागरुकता फैलाता लेख

बॉलीवुड : ऐडी से चोटी तक नशा ही नशा

....मनोचिकित्सक भी इस बात को मानते रहे हैं कि फिल्माए गये नशे के दृश्यों का असर युवाओं और किशोरों पर होता है। अक्सर देखने में आया कि फिल्मों में दृश्यों में नायक तनाव होता है या प्रेम विच्छेद तो उसे शराब या सिगरेट का सहारा लेते हुए दिखाया जाता है, जैसे इस हादसे की सिर्फ यही सर्वोत्तम जड़ी-बूटी हो। इसके अलावा भी फिल्मी दृश्यों में गंभीर मामलों में जैसे किसी केस की जाँच वगैहरा में पुलिस के बड़े अधिकारियों को सिगरेट के कश लगाते हुए दिखाया जाता है। यानि धूम्रपान करने वाले चरित्रों को अक्सर महान व्यक्तित्व या विशेष रूप से सबसे प्रमुख व्यक्ति के तौर पर दिखाया जाता है। ऐसे दृश्यों के होने की जरूरत कहानी के हिसाब से हो सकती है, लेकिन सिनेमा में ऐसा चलन है कि उत्पादों को दिखाकर परोक्ष रूप से उनका विज्ञापन किया जाता है। ऐसे में व्यावसायिक कारणों से दृश्यों को कहानी के भीतर रखा भी जा सकता है। बरसों तक सिनेमा में शराब का सांकेतिक प्रयोग भी होता रहा है। किन्तु हाल के बरसों में शराब को मादकता के साथ आइटम नाच-गानों में परोसने तथा सामान्य रूप से शराब पीते दिखाने का चलन बढ़ा है।....

दम मारो दम, मिट जाये गम - बोलो सुबह शाम, हरे कृष्णा हरे राम। ये गीत आज से लगभग 50 साल पहले हिंदी सिनेमा जगत से 'हरे कृष्णा-हरे राम' फिल्म द्वारा समाज में परोसा गया था। फिर 1974 में 'आपकी कसम' फिल्म से गाना आया - 'जय-जय शिव शंकर, कांटा लगे ना कंकर, ये प्याला तेरे नाम का पिया' इस गीत में नायक-नायिका को भांग पीकर मंदिर की सीढियों से उतरते दिखाया गया।

असल में ये सिर्फ गीत नहीं थे बल्कि बॉलीवुड का एक सच भी है, जिसे अब रिपब्लिक टीवी चौनल के एडिटर-इन-चीफ अर्णव गोस्वामी को दिए एक्सक्लूसिव इंटरव्यू में कई खुलासे किए हैं। एक्ट्रेस कंगना रनौत ने साफ कर दिया है। कंगना ने फिल्म की शूटिंग के दौरान के अपनी अनुभवों को याद करते हुए कहा कि एलएसडी, कोकीन, नशीली गोलियां जैसे ड्रग्स फिल्म बॉलीवुड का अनकहा सच है। कंगना ने आगे कहा कि बॉलीवुड में जितने भी ड्रग्स एडिग्टस हैं। वह एक दूसरे के सिक्रेट्स जानते हैं। और इनके जो डीलर हैं वह सबके सेम हैं। वह ड्रग्स माफिया इनको बेस्ट ड्रग्स उपलब्ध कराते हैं। बॉलीवुड में सुपरस्टार की पत्नियां ऐसी पार्टियां होस्ट करती हैं और उस पार्टी में आपको इसी तरह के लोग मिलेंगे जो किसी न किसी तरह के ड्रग्स लेते हैं।

सिर्फ कंगना ही नहीं पिछले दिनों अकाली दल के विधायक मनजिंदर सिंह सिरसा ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो पोस्ट की थी, जिसमें हिंदी सिनेमा के कई सितारे दीपिका पादुकोण, शाहिद कपूर, विक्की कौशल, रणबीर कपूर, अर्जुन कपूर, और मलाइका अरोड़ा आदि करण जौहर के घर पर थे और नशा कर रहे थे। इस वीडियो का जवाब देते हुए उनकी ओर से कहा गया कि बॉलीवुड में अगर आप कोकीन नहीं लेते तो आप आधुनिक और मस्त नहीं हैं।

अब कंगना के इस ताजा इन्टरव्यू के बाद एक बार फिर साफ हो गया कि बॉलीवुड और नशे का सम्बन्ध बहुत पुराना है। फिल्मकार नायक-नायिकाओं को कह देते है कि ये रहे नशे के उत्पाद इन्हें इस्तेमाल करें और रोल करें। यह सब अभी तक छिपा हुआ था लेकिन आज यह तेजी से अधिक बाहर आता दिख रहा है, जैसे नशे बिना बॉलीवुड नहीं और बॉलीवुड बिना नशा नहीं।

इसका अंदाजा आप 1961 में रिलीज हुई 'हम दोनों' फिल्म के इस गाने से भी लगा सकते है जिसमें देवानंद कहता है 'मैं जिंदगी का साथ निभाता चला गया, हर फिक्र को धुँएं में उड़ाता चला गया'। इसके बाद साल 1984 में आयी प्रकाश मेहरा की फिल्म 'शराबी' में अमिताभ बच्चन को शराब पीते रहते ही दिखाया गया है, उस समय यह लगने लगा था सिगार या शराब बुरी चीज नहीं है अगर बुरी चीज होती तो फिल्मी दुनिया के इतने बड़े सितारें क्यों पीते?

पिछले कुछ दशकों से देखा जाये सिनेमा मनोरंजन का एक बहुत प्रभावी माध्यम बना हुआ है, यही नहीं समय के साथ सिनेमा जगत ने सांस्कृतिक और सामाजिक व्यवहार पर भी काफी असर डाला है। अगर आधुनिकता से फैशन तक के विस्तार में फिल्मों की सकारात्मक भूमिका मानी जा सकती है, तो फिर हिंसा, अपराध, नशाखोरी जैसी बुराइयों को प्रोत्साहित करने में उसके योगदान को कैसे खारिज किया जा सकता है? सभी जानते हैं कि सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, बावजूद इसके हिंदी सिनेमा के पर्दे पर धुएं के छल्ले खूब उड़ता है। किसी को शौक, किसी को तनाव तो कोई गम और खुशी में पीता है।

पिछले कुछ सालों में मनोचिकित्सक भी इस बात को मानते आये हैं कि फिल्माए गये नशे के दृश्यों का असर युवाओं और किशोरों पर होता है। अक्सर देखने में आया कि फिल्मों में दृश्यों में नायक तनाव होता है या प्रेम विच्छेद तो उसे शराब या सिगरेट का सहारा लेते हुए दिखाया जाता है, जैसे इस हादसे की सिर्फ यही सर्वोत्तम जड़ी-बूटी हो। इसके अलावा भी फिल्मी दृश्यों में गंभीर मामलों में जैसे किसी केस की जाँच वगैहरा में पुलिस के बड़े अधिकारियों को सिगरेट के कश लगाते हुए दिखाया जाता है। यानि धूम्रपान करने वाले चरित्रों को अक्सर महान व्यक्तित्व या विशेष रूप से सबसे प्रमुख व्यक्ति के तौर पर दिखाया जाता है। ऐसे दृश्यों के होने की जरूरत कहानी के हिसाब से हो सकती है, लेकिन सिनेमा में ऐसा चलन है कि उत्पादों को दिखाकर परोक्ष रूप से उनका विज्ञापन किया जाता है। ऐसे में व्यावसायिक कारणों से दृश्यों को कहानी के भीतर रखा भी जा सकता है। बरसों तक सिनेमा में शराब का सांकेतिक प्रयोग भी होता रहा है। किन्तु हाल के बरसों में शराब को मादकता के साथ आइटम नाच-गानों में परोसने तथा सामान्य रूप से शराब पीते दिखाने का चलन बढ़ा है।

फिल्मी गानों में उच्च वर्ग के मॉडल और साथियों की उपस्थिति भी धूम्रपान का प्रोत्साहन बिना किसी रोक-टोक के जारी है। चूंकि किशोर इन लोगों से अधिक प्रभावित होते हैं, इसलिए माता-पिता, स्कूल और स्वास्थ्य विशेषज्ञों द्वारा उन्हें सिगरेट

- शेष पृष्ठ 7 पर

क्यों विवादित है दिल्ली दंगों पर आधारित पुस्तक?

.....इस देश में वही पुस्तक प्रकाशित होती है जिसे कोई अजीज बर्नी लिखता है और पुस्तक का नाम होता है 26/11 को हिन्दुओं की साजिश। इसमें कसाब को अमर सिंह बताया जाता है और पुस्तक का विमोचन कोई दिग्विजय करता है। भला मोनिका अरोडा, सोनाली चितलकर और प्रेरणा मल्होत्रा जी की पुस्तक यहाँ कैसे छप सकती जिसमें शहरी नक्सलवाद, जिहादी थ्योरी, पिंजरा तोड़ गैंग कथित मानवाधिकारी जिहादी चोले में कथित सामाजिक कार्यकर्ताओं के नकाब उतार फैंका हो? इस देश में रंगीला रसूल पुस्तक प्रतिबंधित हो जाती है लेकिन पेरियार की लिखी गन्दी रामायण जिसमें भगवान श्रीराम के चरित्र को लेकर मनघडंत बकवास लिखी जाती है वह धडल्ले से प्रकाशित की जाती है। जिसे पढ़कर वामपंथी विचारकों और बुद्धिजीवियों का गिरोह वाह-वाह करता है।.....

लगता है भारत में या तो सच्चाई प्रतिबंधित हो जाती है या फिर उसका गला दबाने की कोशिश की जाती है। हाल ही में एक बार फिर मोनिका अरोड़ा, सोनाली चितलकर और प्रेरणा मल्होत्रा की दिल्ली दंगे पर आधारित एक किताब – 'दिल्ली रायट्स 2020 दी अनटोल्ड स्टोरी' पर विवाद बना हुआ है। कुछ समय पहले मोनिका अरोरा ने पब्लिकेशन हाउस ब्लूम्सबरी से इसे प्रकाशित करने का करार किया था, लेकिन ऐन मौके पर ब्लूम्सबरी ने पुस्तक प्रकाशित करने से इनकार कर दिया।

असल इस देश में वही पुस्तक प्रकाशित होती है जिसे कोई अजीज बर्नी लिखता है और पुस्तक का नाम होता है 26/11 को हिन्दुओं की साजिश। इसमें कसाब को अमर सिंह बताया जाता है और पुस्तक का विमोचन कोई दिग्विजय करता है। भला मोनिका अरोडा, सोनाली चितलकर और प्रेरणा मल्होत्रा जी की पुस्तक यहाँ कैसे छप सकती है, जिसमें शहरी नक्सलवाद, जिहादी थ्योरी, पिंजरा तोड़ गैंग कथित मानवाधिकारी जिहादी चोले में कथित सामाजिक कार्यकर्ताओं के नकाब उतार फैंके गए हों? इस देश में रंगीला रसूल पुस्तक प्रतिबंधित हो जाती है लेकिन पेरियार की लिखी गन्दी रामायण जिसमें भगवान श्रीराम के चरित्र को लेकर मनघडंत बकवास लिखी जाती है वह धडल्ले से प्रकाशित की जाती है। जिसे पढ़कर वामपंथी विचारकों और बुद्धिजीवियों का गिरोह वाह-वाह करता है।

अब ब्लूम्सबरी इंडिया के किताब को प्रकाशित नही करने पर मोनिका अरोड़ा जी सही कह रही हैं कि बोलने की आजादी के मसीहा इस किताब से डरे हुए हैं। हालाँकि ये कोई मुस्लिम विरोधी किताब नहीं है, ये किताब तो पोल खोल रही है कि कैसे शाहीनबाग से लेकर जामिया और सीलमपुर-मौजपुर तक सब कुछ पहले से प्लान था। दंगे फरवरी में हुए लेकिन यह नेटवर्क दिसम्बर में ही अपना काम करना शुरू चुका था।

यानि पुस्तक में पूरा जमीनी शोध है मोनिका जी पहले एक इन्टरव्यू से साफ कर चुकी हैं कि ये साजिश शुरू तब हुई जब यह पता चला कि पाकिस्तान, अफगान और बांगलादेश से प्रताड़ित होकर भारत आए हिंदुओं को नागरिकता दी जाएगी। अचानक फर्जी जानकारी फैलाई जाने लगी और भड़काऊ भाषण दिए जाने लगे। काँग्रेस ने दिल्ली की रैली में लोगों को सड़कों पर उतरने के लिए उकसाया, सोनिया गाँधी ने कहा ये आर-पार की लड़ाई है। सड़क पर आ जाओ, जेलें भर दो, ये आखिरी मौका है। इसके बाद उमर खालिद ने मुसलमानों से कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के भारत आने पर वे सड़कों पर आएँ और इंटनेशनल मीडिया को दिखा दें कि वे भारत में प्रताड़ित हैं, सुरक्षित नहीं हैं। फिर जामिया मिलिया इस्लामिया में आम आदमी पार्टी के नेता अमानतुल्लाह खान के भड़काऊ भाषण में सामने आया कि 'ट्रिपल तलाक' तो मोदी ने समाप्त कर दिया, दाढ़ी, टोपी और अजान भी समाप्त कर देंगे। मुसलमानों सड़कों पर आ जाओ! उसके बाद शरजील इमाम का देश को परमानेंटली काटने का बयान आता है और कांग्रेस नेता मणिशंकर अय्यर तो पीएम मोदी और गृहमंत्री अमित शाह को कातिल ही बोल देते हैं।

यानि पुस्तक में साफ बताया गया है कि बड़े-बड़े नेताओं द्वारा दिसंबर से फरवरी तक परोसे गए नफरत का परिणाम ये दंगा था। धरने से दंगे तक का मॉडल साफ था, इसके स्टेज तय थे- पहले में स्टेज 11 दिसंबर को बिल पारित होने के बाद हर जगह हेट स्पीच दिए जाने लगे। यूनिवर्सिटी के बच्चे-शिक्षक बाहरी लोगों के साथ मिलकर पेट्रोल बम फेंकने लगे, आगजनी करने लगे। पुलिस के साथ मारपीट करने लगे और फिर सुप्रीम कोर्ट, हाई कोर्ट में जाकर कहते हैं कि हमें पुलिस मार रही है, बचा लो।

दूसरा स्टेज था - किसी मुख्य सड़क के एरिया को घेर लो, वह जगह ऐसी होनी चाहिए, जहाँ पर हिंदू-मुस्लिम बराबर संख्या में हों, वहाँ पर टेंट लगा दो। स्टेज पर माइक लगा दो, पीछे आंबेडकर की फोटो के साथ एक संविधान रख दो और साथ में एक तिरंगा। यानि हाथ में तिरंगा और दिल में दंगा होना चाहिए। क्योंकि किस तरह से वहाँ पर माँ काली को बुर्का पहनाया गया, स्वास्तिक को झाड़ू से तोड़ते हुए दिखाया गया। कैसे फिर शाहीनबाग में पी.एफ.आई. का पैसा आया। सुबह से शाम तक बिरयानी बाँटी गई, प्रदर्शनकारियों ने ऐसा माहौल बनाया कि पुलिस उन पर लाठीचार्ज करे, ताकि नेशनल न्यूज बने, मगर ऐसा कुछ नहीं हुआ।

फिर तीसरा स्टेज शुरू होता है - इन लोगों ने बाजारों में, एरिया में, जुलूस में आना शुरू किया। हजारों की संख्या में महिलाओं ने बुर्के में शिव मंदिर के सामने 'आजादी' के नारे लगाए, पुलिसकर्मी जख्मी हुए, मगर आगे महिला और बच्चे होने कारण पुलिसकर्मी कुछ ना कर सके। महिलाओं और बच्चों को आगे करके जिहादी अपनी साजिश को अंजाम दे रहे थे।

चौथे चरण के तहत - 22 फरवरी 2020 को सफूरा जरगर रात के डेढ़ बजे मुस्लिम महिलाओं को लेकर आई और जाफराबाद मैट्रो स्टेशन के गेट नंबर 4 को ब्लॉक कर दिया। इसके बाद सुबह 6 बजे जाफराबाद सड़क को जाम कर दिया। इनकी दूसरी टीम ने चाँदबाग में सड़क को जाम किया। पिंजरा तोड़ गैंग की सदस्य सफूरा, नताशा, देवांगना आदि ने महिलाओं को फ्रंटलाइन में ढाल की तरह इस्तेमाल किया। ताकि पुलिस महिलाओं पर हमला नहीं करेगी और पीछे वे अपने मंसूबों को अंजाम देने में कामयाब हो जाएँगे।

24 फरवरी को यही महिलाएँ मौजपुर चौक पर हजारों की संख्या में बैठी हुई थी। तभी महिलाओं ने डीसीपी अमित शर्मा को बुलाया कि आइए बात करते हैं। उन्होंने सोचा कि महिलाएँ हैं और बातचीत से मसला हल हो जाएगा। मगर जैसे ही वे वहाँ पर पहुँचे महिलाओं ने बुर्के में से चाकू, छूरी, रॉड, डंडों आदि से उन पर हमला कर दिया। एक ने उनका हेलमेट निकाल दिया बाकी ने उनके सिर पर मारा, जिहादी भीड़ उन पर टूट पड़ी।

दूसरी ओर पार्षद ताहिर हुसैन ने किस तरह दंगे के एक दिन पहले खजूरी खास थाने से अपना पिस्टल रिलीज करवाया था। घर के सीसीटीवी कैमरा को बंद कर दिया था। इसके बाद उन्होंने शिव विहार में हिंदू स्कूल को निशाना बनाया गया। स्कूलों को लूटा गया, फिर उसे जला दिया गया। आईबी के अंकित शर्मा की नृशंस हत्या की गई, दिलबर नेगी को काटकर जला दिया गया और विवेक के सिर में ड्रिल कर दिया गया।

हिंसा की पठकथा यह थी कि 19 दिसंबर को सीलमपुर के 7 मैट्रो स्टेशन को बंद कर दिया जाता है। 40,000 जिहादियों की भीड़ इकट्ठा होती है। 13 जनवरी को 4000 की संख्या में जुलूस मालवीय नगर की तरफ आजादी के नारे लगाती निकलती है। 15 जनवरी को हर जगह धरने शुरू हो जाते हैं। 22 फरवरी को मुस्लिम महिलाओं को बुलाकर जाम कर दिया जाता है। फिर 23 फरवरी को साढ़े तीन बजे बीजेपी नेता कपिल मिश्रा और स्थानीय लोग इकट्ठा होते हैं और प्रदर्शनकारियों के हटने के लिए कहते हैं। इसके बाद इस बात को हवा दी जाने लगी कि कपिल मिश्रा ने दंगा भड़काया, मगर इससे पहले ही जगह-जगह पर भीड़ इकट्ठी होना शुरू हो गयी थी। जहाँ भी भीड़ को पुलिस जमा होने से रोकती शहरी नक्सलवादी शोर मचा देते कि संविधान खतरे में है अभिव्यक्ति की आजादी कुचली जा रही है और इन बयानों की आड़ में दंगे का जहर भरा जाता रहा है।

23 फरवरी की शाम से ही पत्थरबाजी शुरू हो जाती है। 24 फरवरी की सुबह दुकानें जला दी जाती है। डीसीपी अमित शर्मा को अधमरा कर दिया जाता है। हेड कॉन्स्टेबल रतनलाल की हत्या कर दी जाती है। यानि स्क्रिप्ट पहले से ही तैयार थी कि किसका कौन सा रोल होगा। ये बात दिल्ली पुलिस द्वारा दाखिल किए गए चार्जशीट में कही गयी है। अंत में मोनिका अरोड़ा कहती हैं, मुझे आशा नहीं विश्वास है धरने से दंगे तक का ये मॉडल आखिरी एक्सपेरिमेंट होगा। ऐसा कोई भी शाहीनबाग-2, कोई भी खिलाफत-2, कोई भी जिन्ना वाली आजादी के नारे नहीं लगा पाएगा और कोई भी यहाँ ऐसी साजिशें नहीं कर पाएगा। फिर किसी माँ प्रीति गर्ग को पहली मंजिल से अपने बच्चों को नहीं फेंकना पड़ेगा। फिर किसी विनोद कश्यप को सिर पर पत्थर मार-मारकर खत्म नहीं किया जाएगा। हम कोशिश करेंगे कि ऐसा हिंदुस्तान हमारे सामने आए। ये हमारी भी कोशिश है और आपकी भी। कम से कम हम सच्चाई को सामने तो रखें। सच्चाई तो 100 पर्दे फाड़कर सामने आ जाती है। अब पुस्तक आकर रहेगी यदि एक प्रकाशक मना करता है, तो दस और आ जाएंगे ये पुस्तक उजागर करेगी कि दंगों के लिए प्रशिक्षण कैसे दिया गया था और दुष्प्रचार तंत्र इसमें कैसे शामिल था।

- राजीव चौधरी

आर्यसमाज के सेवा संस्थान - अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत कार्यरत सेवा ईकाई

'सहयोग' द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन यज्ञ एवं वस्त्र का वितरण

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई 'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' का सेवा प्रकल्प ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है। पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित सहयोग एक ऐसी कल्याणकारी दिव्य योजना है, जिससे लाखों लोग व्यक्ति से व्यक्ति को जोड़ने में सहायक होता है। 'सहयोग' अपने कार्यक्रमों के माध्यम से इसी आस्था को लोगों में जागृत कर रहा है ताकि लोग संगठन के साथ चलकर समाज को नयी दिशा प्रदान करें।

कार्यक्रम की शुरुआत में मौसम देखकर लगा कि तेज बारिश होगी पर जैसे ही अग्नि प्रज्ज्वलित हुई आसमान साफ हो गया, यज्ञ बिना किसी विघ्न के सम्पन्न हुआ तत्पश्चात् वस्त्र वितरण किए और अपनी खुशबू से सारे जहाँ को महकाएगी।

इसी तरह ही सहयोग ने इस क्षेत्र में यज्ञ की शुरुवात की थी और जब पिछले सप्ताह यहाँ की महिलाओं और बहनों ने मिलकर जब कहा कि 'हम भी यज्ञ सीखना चाहतें हैं ताकि हम अपने घरों में स्वयं यज्ञ कर सकें और अपनी इस पवित्र परम्परा का निर्वहन कर सकें।'

माताओं-बहनों ने जब ये बातें कहीं माध्यम से आप इस सेवा का हिस्सा बन सकते हैं। आपके घर में बहुत-सा ऐसा सामान होता है जो आपके काम नहीं आता है किन्तु किसी अन्य के लिए वह बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। आप वह सामान हमें दें, हम उसे हर जरूरतमंद तक पहुँचाएंगे।

आप हमें 'वस्त्र, पुस्तकें, खिलौने, जूतें, चप्पल, आदि' सामान दे सकते हैं। आप सामान एकत्र करके सहयोग टीम

लगातार लाभ प्राप्त कर रहे हैं। प्रान्तीय स्तर पर दिल्ली में सहयोग का कार्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत किया जा रहा है।

दिनांक 30 अगस्त, 2020 को कमला नेहरू कैम्प,कीर्ति नगर में यज्ञ व वस्त्र वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

'आस्था' केवल एक शब्द ही नही बल्कि विश्वास की एक पहचान है जो और सभी को पुरोहित जी द्वारा प्रसाद भी भेंट किया गया।

दिनांक 31 अगस्त 2020 को हनुमान मंदिर, जहांगीर पुरी में यज्ञ प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ।

जब आपके द्वारा बोए गए बीज अंकुरित होते दिखाई देते हैं तो मन को एक असीम शांति मिलती है कि मिट्टी की कोख से एक दिन एक कली खिलेगी तो महसूस हुआ कि यज्ञ की ज्योति जो अभी तक वेदी तक सीमित थी वो आज माताओं बहनों के हृदय में जागृत हो रही है। इसीलिए आज हमने जहांगीर पुरी के हनुमान मंदिर में यज्ञ किया व सभी को मंत्रोच्चारण व यज्ञ करने का प्रशिक्षण दिया। अगली बार हम यहाँ यज्ञ के साथ वस्त्र वितरण भी करेंगे।

आपका योगदान - 'सहयोग' के को 9540050322 पर कॉल करें। हमारी गाड़ी आपके घर से सामान लेकर आएगी। आप अपना सहयोग हमारे कार्यालय आकर भी दें सकते हैं। कार्यालय पता है- **आर्य समाज मन्दिर, डी.सी.एम. रेलवे कोलोनी, निकट फिल्मिस्तान, दिल्ली-110007**

स्वास्थ्य रक्षा

स्वास्थ्य के प्रति हर क्षण सजग रहें

आजकल लगभग सभी लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत क्यों हैं? क्योंकि कोरोना वायरस का कहर जारी है, देश और विश्व में चारों तरफ लाखों लोग इसकी चपेट में आ गए हैं। इस कारण से लोग अपने और अपनों के स्वास्थ्य को लेकर जागरूक दिखाई दे रहे हैं, वरना तो केवल और केवल सब अपने-अपने कार्य क्षेत्रों में इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हें स्वास्थ्य की परवाह ही नहीं रहती, न भोजन का निश्चित समय रहता और न सोने-जागने का कोई नियम। बस केवल धन अर्जित होना चाहिए, जबकि हमारा अपना स्वास्थ्य भी सबसे बड़ा धन है, "शरीर माध्यम खुलु धर्म साधनम्" धर्म के मार्ग पर गति करने के लिए शरीर ही तो परम साधन है, शरीर ठीक है तो हम जीवन में आगे बढ़ सकते हैं, शरीर स्वस्थ है तो हम उन्नति-प्रगति और सफलता प्राप्त कर सकते हैं। किंतु मनुष्य अपने कार्य क्षेत्र में सफलता के लिए, धन कमाने के लिए शरीर की परवाह नहीं करता, शरीर खराब करके धन कमाने में लगा रहता है, फिर शरीर को ठीक करने में धन खर्च कर देता है, इस तरह मनुष्य धन तो कमा लेता है लेकिन धन खर्च करके भी शरीर ठीक नहीं होता। यहां प्रस्तुत है स्वसस्थ्य रक्षा के विषय में प्रेरक लेख। - सम्पादक

आयुर्वेद में सबसे अधिक महत्त्व शरीर की रक्षा और इसका उचित विधि से पालन किए जाने को दिया है। चरक संहिता में कहा गया है-**अन्य सभी सांसारिक कार्यों को छोड़कर शरीर का सही पालन अति आवश्यक है, वरना इसके अभाव (खात्मा) हो जाने पर सभी वस्तुओं का अभाव हो जाता है।** बात है भी सही, अगर हमारा शरीर ही न रहा तो हमारे लिए यह दुनिया काम की नहीं रहेगी, क्योंकि तब **'हम मरे जग डूबा'** वाली स्थिति हो जाएगी। एक कहावत है कि **'जान है तो जहान है'** और जान इस शरीर में ही रहती है। शरीर ही न रहे तो जान कहां रहेगी? जैसे हम जिस मकान में रहते हैं, उसे साफ-सुथरा, मजबूत और रंग-रोगन करके अच्छी हालत में रखते हैं, वैसे ही यह शरीर हमारे जीवात्मा का मकान है, जिसे हम 'मैं' या 'हम' कहते हैं। **हमारे मकान की तरह इस शरीर को साफ-सुथरा, निरोग, मजबूत रखने का प्रयत्न करना ही स्वास्थ्य की रक्षा है।** हमारा प्रथम कर्त्तव्य शरीर और स्वास्थ्य की रक्षा करना ही होना चाहिए, लेकिन आमतौर पर देखने में यही आता है कि लोग दुनिया के काम-काज और प्रपंच में इतने व्यस्त कि शरीर और स्वास्थ्य की रक्षा के विषय में सोच ही नहीं पाते, करना-धरना तो दूर की बात है। **अगर कोई उनको कहे तो कहते हैं कि मरने तक की तो फुरसत नहीं और शरीर और स्वास्थ्य की फिक्र रखने की बात करते हो, यूं ही क्या कम फिक्र हैं करने के लिए?**

ऐसे लोग तब तक फिक्र नहीं करते, जब तक चारपाई पर नहीं पड़ जाते। जब तक चलती है, चलाते रहते हैं। **जैसे जब तक छाछ गाढ़ी रहे तब तक उसमें पानी मिलाने से फर्क मालूम नहीं पड़ता, लेकिन जब पानी की मात्रा ज्यादा हो जाती है तब आंखें खुलती हैं, वैसे ही शरीर की दुर्दशा हो जाने पर होता है।** आदमी जब तक चारपाई पर नहीं पड़ जाता, बल्कि कभी-कभी तो चारपाई खड़ी होने की भी नौबत आ जाती है और जब जान के लाले पड़ जाते हैं, तब आंखें खुलती हैं, लेकिन तब वही स्थिति आ जाती है **'अब पछताए क्या होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत'** हम शरीर की कद्र न कर सके, इसका मूल्य न समझ सके और इसकी दशा बिगाड़ लें, फिर सम्हलें भी तो इससे क्या फायदा होगा? **सब कुछ लुटा के होश में आए तो क्या?** ज्यादातर ऐसा होता है कि हमें किसी चीज की कीमत तभी मालूम होती है जब वह चीज खत्म होने वाली है या खत्म हो चुकी होती है। इस विषय में हम एक उदाहरण प्रस्तुत हैं।

एक बार एक राजा शिकार के पीछे घोड़ा दौड़ाता हुआ रास्ता भटक गया। उसके अंगरक्षक और संगी-साथी बिछड़ गए। वह काफी देर तक भटकता रहा, पर उसे जंगल से बाहर निकलने की कोई राह न मिली। वह भूख-प्यास से व्याकुल हो उठा। यहां तक कि प्यास से व्याकुल होकर उसका घोड़ा बेसुध होकर गिर पड़ा। राजा की हालत भी खराब हो रही थी। गला सूख गया और जीभ में कांटे से चुभते मालूम हो रहे थे। वह पानी की तलाश में जैसे-तैसे पैदल ही भटकने लगा।

अचानक उसे एक कुटिया दिखाई दी। उसकी जान में जान आई और गिरता-पड़ता कुटिया के सामने पहुंचा और पानी-पानी पुकारता हुआ गिर पड़ा। उसकी पुकार सुनकर कुटिया से एक संन्यासी बाहर आया। सामने पड़े हुए व्यक्ति की वेश-भूषा और भव्य-व्यक्तित्व को देखकर संन्यासी पहचान गया कि यह राजा है। संन्यासी ने उसे सहारा देकर उठाया और आसन पर बिठाया। राजा उसे व्याकुल नजरों से देखता हुआ बोला-मुझे पानी दीजिए, दो घूंट पानी दीजिए, वरना मेरे प्राण निकल जाएंगे।

राजा को शिक्षा देने के उद्देश्य से संन्यासी बोला-आप तो राजा मालूम होते हैं। मैं आपको पानी दूं तो बदले में आप मुझे क्या देंगे? राजा तो प्यास के मारे तड़प रहा था, सो बोला-मारे प्यास के मेरी जान पर आ बनी है। आप जो कहे सो मैं देने को तैयार हूं। मुझे पानी दीजिए। आप मेरी जान बचाइए। आप यह सब जेवर ले लीजिए। इतना कहकर राजा अपने गले में पहने हुए मोती और पन्ने के आभूषण उतारने लगा, तो संन्यासी ने उसको रोकते हुए कहा-आपने पानी का मूल्य कम लगाया है। आपकी जान बचाने वाले पानी के मुकाबले में ये जेवर इतने मूल्यवान नहीं। राजा बोला-मैं अपना आधा-राज्य आपको दूंगा, पानी दीजिए। संन्यासी बोला-आपकी जान के बदले आपका आधा राज्य? राजन्! यह उचित मूल्यांकन नहीं। आधे-राज्य के बदले में भी पानी नहीं दूंगा। राजा बोला पानी न मिला तो मैं मर जाऊंगा, फिर राज्य मेरे किस काम का। आप पूरा राज्य ले लें, पर अब पानी देकर मेरे प्राण बचाएं।

- शेष पृष्ठ 5 पर

"प्रेरक जीवन श्री हंसमुखभाई परमार आर्य" पुस्तक का विमोचन

गुजरात के मोरबी जिल में स्थित आर्य समाज टंकारा द्वारा 24 अगस्त को गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व मंत्री एवं आर्यवीर दल गुजरात के पूर्व संचालक श्री हंसमुखभाई परमार आर्य जी की प्रथम पुण्यतिथि पर उनके कार्यों को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर आर्य समाज टंकारा की ओर से प्रकाशित पुस्तक "प्रेरक जीवन श्री हंसमुखभाई परमार आर्य " का विमोचन आचार्य सत्यजित जी की विशेष उपस्थित में हुआ। कार्यक्रम में आर्य समाज टंकारा के पदाधिकारी एवं हंसमुखभाई जी के परिवार जन आदि उपस्थित रहे। – ***मन्त्री***

आर्यसमाज नूरपुर (हि.प्र.) में दयानंद संस्कार वाटिका का शुभारम्भ

आर्य समाज नूरपुर (हिमाचल प्रदेश) ने 15 अगस्त 2020 को स्वतंत्रता दिवस आत्म प्रज्ञा आश्रम बागनी में धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर दयानंद संस्कार वाटिका का भी शुभारंभ किया गया। यह वाटिका प्राइमरी स्कूल के बच्चों तक के लिए प्रस्तावित है। यज्ञ समाप्ति के पश्चात स्वामी वेद प्रकाश जी संचालक आत्म प्रज्ञा आश्रम ने स्वतंत्रता दिवस के बारे में अपने विचार रखें और उसके बाद प्रवीण महाजन मंत्री आर्य समाज नूरपुर ने राम मंदिर के लिए सबको बधाई देते हुए दयानंद संस्कार वाटिका के बारे में सबको सूचित किया। स्वामी वेद प्रकाश जी ने बच्चों को वैदिक तथा यज्ञ शिक्षा देने का पूरा आश्वासन दिया है। वाटिका का सारा व्यय आर्य समाज नूरपुर के सदस्य सहन करेंगे। बच्चों को लोअर और बनियाने बांटी गई।

– ***चंद्रप्रकाश महाजन, प्रधान***

आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर द्वारा ऑनलाइन भजन प्रतियोगिता

आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर के तत्वावधान मे रविवार 30 अगस्त, 2020 सांयकाल ऑनलाइन भजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में 19 प्रतिभागियों ने अलग-अलग स्थानों से इसमें भाग लिया। सभी प्रतियोगियों ने आर्य समाज, वेद, स्वामी दयानन्द एवं देश के महान सपूतों के भजन गाए और सब भक्ति रस में डूब गये। कार्यक्रम के जजों प्रो. कुलदीप आर्य (अध्यक्ष संस्कृत विभाग डीएवी कालेज अमृतसर), सुनीता भाटिया जी (सेनि.अध्यापिका एसएल भवन सकूल अमृतसर) एवं सोनी आर्य (वैदिक भजनोपदेशक एवं संगीतज्ञ) ने बड़ी खूबी से अपना काम किया।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान – इन्दिरा अरोड़ा (गाजियाबाद), द्वितीय स्थान – सुरति (गाजियाबाद), सौरव तलवाड (अमृतसर), रेणू घई (अमृतसर) एवं तृतीय स्थान – रंजू (अमृतसर) ने प्राप्त किया। सभी विजेताओं को बहुत बहुत बधाई एवं सभी प्रतियोगियों ओर श्रोतागणों का बहुत बहुत धन्यवाद व्यक्त किया गया।

– ***मुकेश आनन्द, उप मन्त्री***

आर्य समाज बासुदेवपुर (ओडिशा) द्वारा रक्तदान शिविर सम्पन्न

युवा आर्य समाज ओडिशा के तत्त्वावधान में युवा आर्य समाज बासुदेवपुर द्वारा नबघन डिग्री महाविद्यालय में 26 अगस्त को एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। रक्तदान शिविर में 64 लोगों ने रक्त दान किया। जिसमें युवा आर्य समाज के सदस्यों एवं स्थानीय आर्यजनों ने रक्त दान किया। युवा आर्य समाज, ओडिशा के मार्गदर्शक पंडित वीरेंद्र कुमार पंडा जी के सफल मार्गदर्शन में सामाजिक व राष्ट्रीय कल्याण कार्यक्रम समग्र ओडिशा में अपने ऊर्जावान कार्यकर्ताओं के द्वारा किया जा रहा है। रक्त दान कार्यक्रम में मुख्य सहयोगी राजेंद्र विश्वास जी, दीपक आर्य जी, सचिन आचार्य, बादल नायक, दीपक सेठी, खगेश्वर नायक, संग्राम नायक, ब्रह्मानंद दास, कार्तिक बेहेरा आदि ने प्रमुख उपस्थित रहकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया।– ***मन्त्री***

पृष्ठ 4 का शेष

संन्यासी मुस्कराया और बोला राजन्! मैं राज्य लेकर क्या करूंगा, मैं तो पहले ही सब छोड़-छाड़ चुका हूं। मैं तो आपको यह समझाना चाहता था कि जो कुछ भी धन-वैभव आदि आपके पास है, उसका मूल्य और उपयोग एक लोटे भर पानी के सामने कुछ भी नहीं। यदि आपका शरीर न बचे तो सब यूं ही पड़ा रह जाएगा। आज आप इस रहस्य को समझ गए होंगे कि जीवन सबसे मूल्यवान होता है। यह जीवन शरीर पर निर्भर होता है, इसलिए शरीर जीवन से भी ज्यादा मूल्यवान् होता है। शरीर की रक्षा हर कीमत पर करनी चाहिए, जैसे आप इस वक्त सारा राज्य देने को तैयार हो गए हैं। **याद रखें, सुखी जीवन जीने के लिए स्वस्थ शरीर होना सबसे ज्यादा जरूरी है।**

कई लोगों को यह बात, इस राजा की तरह तब तक समझ नहीं आती, जब तक उनका स्वास्थ्य बिगड़ न जाए वे बीमार न पड़ जाएं। जब बीमार पड़ते हैं तब स्वास्थ्य की याद आती है। आपने शायद यह दोहा पढ़ा या सुना है-

दुःख में सुमिरन सब करें,
सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करें,
तो दुःख काहे को होय।।

यह दोहा ईश्वर की उपासना के विषय में है, लेकिन इस दोहे पर यदि हम शरीर और स्वास्थ्य की दृष्टि से विचार करें तो भी यह दोहा बिलकुल सटीक बैठता है। हम ईश्वर के मामलें में ही नहीं अन्य कई मामलों में भी तब तक ध्यान नहीं देते, जब तक हमारे सिर न आन पड़े।

यदि हम स्वस्थ अवस्था में ही शरीर और स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, शरीर के सभी अंगों को स्वस्थ रखने का प्रयास रखें और स्वास्थ्य की रक्षा करते रहें तो अस्वस्थ होने नौबत ही क्यों आए? इसलिए अपने स्वास्थ्य की रक्षा करें,

सही निर्णय कैसे लें?

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

.....सही निर्णय लेने के लिये बुद्धि का सात्विक और शान्त होना आवश्यक है। आवेश, क्रोध या भावावेश में लिया गया निर्णय कई बार पराजय, अपमान या उपहास का पात्र बना देता है।.....

....'मन के हारे हार है मन के जीते जीत' मनोबल बनाये रखने वाले व्यक्ति के सभी कार्य पूरे होते हैं। यदि आपने कार्य शुभ भावना से प्रेरित होकर प्रारम्भ किया है तो फिर आपको भयभीत होने या बीच में ही कार्य छूट जाने की भावना मन में नहीं आने देनी चाहिये।.....

1. संकल्प विकल्प मन करता है और निर्णय बुद्धि लेती है।

सही निर्णय लेने के लिये बुद्धि का सात्विक और शान्त होना आवश्यक है। आवेश, क्रोध या भावावेश में लिया गया निर्णय कई बार पराजय, अपमान या उपहास का पात्र बना देता है।

2. जो कुछ करें उस पर सभी पहलुओं से विचार करें। उसके दीर्घकालीन लाभ-हानि का आकलन करके ही आगे कदम बढ़ाये।

बिना विचारे जो करे सो पीछे पछताय।
बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से खाय।।

3. आपके साहसिक निर्णय लेने से यदि पहले के कार्य प्रभावित होते हैं अथवा उलट फेर होने के कारण अनेक अड़चने आती हैं तो उनसे विचलित न होवें। श्रेयांसि बहु विध्नानि अच्छे कार्यों में बाधायें आती ही हैं। स्मरण रहे बाधायें कब रोक सकी हैं आगे बढ़ने वालों को।

4. सही समय पर निर्णय लें। कई बार आप किसी कार्य के विषय में सोचते ही रहते हैं और उतने समय में दूसरा व्यक्ति उस अवसर का लाभ उठाकर आगे बढ़ जाता है। आजकल स्पर्धा का युग है। परन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं है। बिना विचारे आनन-फानन में एकदम निर्णय ले लिया जाये। किसी कार्य का एक अवसर होता है उसे हाथ से न जाने दे।

5. अपने हितैषी जनों से परामर्श करें और फिर उस पर शान्त मन से विचार करके ही आगे बढ़ें।

6. भावुकता में लिया गया निर्णय कई बार आपत्ति में डाल देता है। अधिक दु:खी अधिक प्रसन्नता के समय भी निर्णय लेने पर बाद में पछताना पड़ सकता है। इसलिये बहुत गम्भीरता पूर्वक विचार कर ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिये। भावनायें अस्थायी होती हैं।

7. एक बार जो निर्णय ले लिया उस पर अडिग रहें। बार-बार निर्णय बदलने से व्यक्ति का विश्वास उठ जाता है। जिससे जो प्रतिज्ञा की है उसे पूरा करने का प्रयत्न करना चाहिये। जैसी हानि प्रतिज्ञा तोड़ने वाले की होती है उसकी क्षतिपूर्ति करना सम्भव नहीं है।

8. बड़ा निर्णय लेने का साहस करें। यद्यपि लोक में कहावत है हाथी यदि पहाड़ से टकरायेगा तो उसके दाँत ही टूटेंगे। परन्तु इसके अपवाद भी है-

पृथक् प्रायन् प्रथमा देवहूतयोऽ
कृण्वत श्रेयांसि विदुष्टरा:।
न शेकुर्यज्ञियां नावमा: हमीर्मेव ते
न्याविशत केपय:।।

दिव्य विभूतियाँ अपना मार्ग स्वयं बनाती हैं और वे ऐसा कार्य कर दिखाती हैं जिसे सुनकर लोग दाँतों में अंगुली दबा लेते हैं। रवीन्द्र नाथ टैगोर कहते हैं-

यदि तोर डाक सुने कोई न
आशे तबै एकला चलो रे।

9. योजना बद्ध होकर कार्य प्रारम्भ करें। आपकी योजना से प्रभावित हो दूसरे लोग भी आप से जुड़ जायेंगे। यदि आप अपनी योजना को दूसरे लोगों के गले उतार सकें तो फिर सफलता निश्चित है। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने से व्यक्ति मानसिक रूप में थकता नहीं है। वह जानता है कि इस कार्य का इतना भाग पूरा हो गया और आगे का कार्य भी इसी प्रकार पूरा हो जायेगा। इससे उस व्यक्ति का आत्म विश्वास बढ़कर निश्चिन्तता आ जाती है। कार्य का एक भाग अधूरा छोड़ दूसरा प्रारम्भ कर दिया तो उसकी रूपरेखा बिगड़ जायेगी और लोगों का विश्वास आपसे उठ जायेगा।

10. चुनोतियों को स्वीकार करें। जीवन संग्राम में कई बार चुनोतियों से दो-दो हाथ करने ही पड़ते हैं। जिन्होंने उन्हें स्वीकार कर संघर्ष किया वे ही सफलता के शिखर पर पहुँच पाते हैं। महाराजा रणजीत सिंह विद्रोहियों को दबाने के लिये अटक नदी के तट पर पहुँचे। सरदारों ने कहा महाराज नदी पूरे उफान पर है। अब क्या उपाय किया जाये? महाराजा रणजीत सिंह ने सबसे पहले अपना घोड़ा नदी की ओर बढ़ा दिया- जिसके मन में अटक है साई अटक रहा।

उनको देख सभी की हिम्मत बढ गई और देखते ही देखते उनकी सेना ने अटक नदी को पार कर लिया।

11. आत्म विश्वास को बनाये रखें। सब से बड़ा बल आत्मविश्वास है जो व्यक्ति को अपने पथ से विचलित नहीं होने देता। 'मन के हारे हार है मन के जीते जीत' मनोबल बनाये रखने वाले व्यक्ति के सभी कार्य पूरे होते हैं। यदि आपने कार्य शुभ भावना से प्रेरित होकर प्रारम्भ किया है तो फिर आपको भयभीत होने या बीच में ही कार्य छूट जाने की भावना मन में नहीं आने देनी चाहिये।

Makers of the Arya Samaj : Mahatma Hansraj

.....After coming out of the jail Swami Shraddhanand went back to Delhi. Soon afterwards he received an invitation from Agra. Some Rajputs there, who were Hindus in everything but in name, were to be converted to Hinduism. This work appealed to him, and he toured the United Provinces for this purpose. He was successful in his mission and won over the Rajputs. The Rajputs were welcomed back to the fold. In the meantime the Mohammadans took offence at this and tried to undo the Swami's work. But they failed. Then the Swami established the All-India Shuddhi Sabha. The object of this was to bring non-Hindus into the fold of Hinduism.....

Hoshiarpur is one of the most fertile districts in the Punjab. It has a fine climate and a good rainfall. A large number of streams flow through it. These are known as *chos.* It has many mountains which add to its beauty. Mangoes grow in plenty, and people call it "the Garden of the Punjab." It is inhabited mostly by Hindus. Ofthese the Brahmins and the Rajputs are the most important. Since the number of Brahmins is very large, there are many temples and places of worship there. The Rajputs, however, are known for their strength and fighting powers. Most of these people live by tilling the soil.

In this district there is a small town named Bajwara. It is about three miles from Hoshiarpur. It is an ancient and historic town and was once the capital of a small state. Raja Sansar Chand was one of its most famous rulers. Through him the town came to be known far and wide. He builta strong fort there. Ifwe pay a visit to this town we shall see the ruins of the fort even now. This place is inhabited mostly by Kshatriyas.

It was in this town that Hans Raj was born in 1864. He came of a respectable Kshatriya family. This family had never been rich, but had always been known for its honesty and industry. One of its members was L. Chuni Lal, He had two sons. One was called Mulk Raj and the other was Hans Raj. Though this man was not rich he wanted to give his sons a good education. He therefore sent both ofthem to school.

Hans Raj was only ten years old when his father died. It was a terrible shock for all the family, especially for the poor mother. She did not know what would happen to her. She was poor and her children were very young. She did not know how she would be able to support herself and the children.

It is said that she went to her husband on his deathbed, and asked him," Who. will look after me when you are gone?" The dying man comforted her and said, "God will take care of you. He will provide for you and your children. It is true you are poor now, but I believe you will not remain poor very long. I know our name is very obscure, but I am sure it will become famous soon. I have great hopes in my sons. They will be famous one day. Trust in God, therefore, and do not be afraid."

After the death of their father Mulk Raj left his native place. He had passed the entrance examination and went to Lahore in search of a job. There he secured service in the Railway Department. It was a petty job which brought him only a few rupees a month. But on this small pay Mulk Raj supported his mother and the other members of the family. He sent for his younger brother and put him in the local M ission School at Lahore. He also made it his duty to look after his mother. He was able to do all this because he practised economy.

Thus Hans Raj read in the

Mission High School, Lahore. He was a quiet, gentle and hardworking boy and was liked by all his teachers. His class-fellows also liked him very much. They all admired him for his simplicity and frugality. But the boy Hans Raj was indifferent to the praise of others. His only object at school was to make the best use of his time. So he read a lot, not only his textbooks but other books as well. He took a particular interest in history. He had a great liking for the history of his own country, especially the history of ancient India. He read about the greatness oft he Aryans. This filled him with pride in the past of his country.

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

Regn. No. S - 8149/1976
Email : aryasabha@yahoo.com
Website : delhisabha.org

ओ३म्

२३३६०१५०
२३३६५६५६
फैक्स : २३३६५६५६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)
The Delhi Arya Pratinidhi Sabha
१५–हनुमान् रोड, नई दिल्ली – ११०००१

क्रमांक : 2020-21/172/दिल्ली सभा दिनांक : 1 सितम्बर, 2020

कोरोना महामारी (अनलॉक-4) में सरकार द्वारा जारी आवश्यक दिशा-निर्देश समस्त आर्यसमाजों के अधिकारीगण कृपया ध्यान दें 30 सितम्बर, 2020 तक लागू रहेंगे यें नियम

माननीय महोदय/महोदया,

सादर नमस्ते!

वैश्विक महामारी कोरोना की स्थिति को देखते हुए भारत सरकार के निर्देशानुसार लागू हुई अनलॉक-1 की प्रक्रिया में सभी धार्मिक संस्थाओं में धार्मिक – सांस्कृतिक गतिविधियां आरंभ हुईं। अनलॉक-2 एवं अनलॉक-3 के बाद अनलॉक 4 लागू किया गया है तथा 30 सितम्बर, 2020 तक दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं –

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में हम सबको सावधानीपूर्वक कार्य करने हैं जिससे हमारे आर्यसमाज मन्दिर एवं संस्थान को या हमारे सहस्यगणों को यह महामारी प्रभावित न कर सके। अतः दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आप सबसे निम्न बिंदुओं पर विशेष ध्यान देने का अनुरोध करता हूं –

- ★ 21 सितम्बर, 2020 से साप्ताहिक सत्संगों का नियमित आयोजन करें। अधिकतक 100 की संख्या तक आर्यजन शारीरिक दूरी एवं अनिवार्य मास्क के साथ सम्मिलित हो सकते हैं।
- ★ स्वास्थ्य की दृष्टि से योगासन आदि की कक्षाएं मास्क एवं दो गज की अनिवार्य शारीरिक दूरी के साथ नियमित रखें।
- ★ यज्ञशाला तथा सत्संग हॉल के बाहर हाथ धोने की सुचारू व्यवस्था हो। सभी सम्मिलित लोग स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें तथा शारीरिक दूरी बनाए रखें।
- ★ विवाह व सामाजिक कार्यक्रमों को आयोजित करने में सरकारी दिशा-निर्देशों का सख्ती से पालन करें। वर-वधु पक्ष/कार्यक्रम आयोजक आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर कुल 100 से अधिक न हों, इसका ध्यान रखें।
- ★ विवाह आदि आयोजन हेतु आवेदन पत्र में एक बिंदु लिखा जाएगा कि 'मैं कोविड-19 के बचाव के लिए सरकार द्वारा निर्देशित नियमों का पालन करूंगा।'
- ★ किसी भी समारोह/कार्यक्रम/उत्सव में शामिल लोगों के मोबाइल में आरोग्य सेतु एप्प अवश्य इंस्टाल होना चाहिए।
- ★ ध्यान दिया जाए कि 65 वर्ष से अधिक आयु लोग/गम्भीर बीमारी से ग्रस्त लोग, गर्भवती महिलाएं एवं 10 वर्ष की आयु से छोटे बच्चे किसी आयोजन में सम्मिलित न हों।
- ★ सभी व्यक्ति तथा आर्य समाज के सहयोगी सदस्यगण अनिवार्य शारीरिक दूरी बनाकर रखें, मास्क पहने, सैनिटाइजर/साबुन का अवश्य उपयोग करें।
- ★ आयोजन से पहले और बाद में सफाई की विशेष व्यवस्था होनी चाहिए। सम्पूर्ण आर्यसमाज को सैनेटाइज्ड अवश्य कराएं।
- ★ समाज के उत्सव एवं वेद प्रचार सप्ताह आदि सभी गतिविधियों को आरम्भ करने के लिए तैयारी आरम्भ करें और 21 सितम्बर के बाद आयोजन की तिथियां निर्धारित करें।
- ★ आर्यसमाज के नए निर्वाचन के लिए तैयारी आरम्भ कर दें और अगले माह तक अवश्य करा लेवें। इस हेतु सभा की देय दशांश एवं वेद प्रचार राशियां भी भिजवा दें। सभा की ओर से निर्वाचन अधिकारी आपकी आर्यसमाज मांग के अनुसार चुनावों हेतु भेजे जा सकते हैं।
- ★ यदि आपकी आर्यसमाज के अन्तर्गत शिक्षण संस्थान/विद्यालय चल रहा है उसे इस विषय में जारी नियमों का पूर्णतः पालन करें।
- ★ सरकार द्वारा दिए गए दिशा-निर्देशों का पालन अवश्य करें।

भवदीय

(धर्मपाल आर्य)
प्रधान, मो. : 9810061763

रोहिणी जिले के नवनियुक्त जिलाध्यक्ष भाई देवेन्द्र सालंकी ने आर्य समाज द्वारा यज्ञ कराकर सांसद हंसराज हंस की उपस्थिति में कार्यभार संभाला। इस अवसर पर सांसद एवँ जिलाध्यक्ष को जोगेंद्र खट्टर, सुरेन्द्र आर्य एवँ योगेश आत्रेय ने ओ३म चिन्ह प्रदान किया।

पृष्ठ 2 का शेष

से बचाने की कोशिशें अक्सर असफल सिद्ध होती जा रही हैं। इसके देखा-देखी आज समाज में युवा और किशोर ही नहीं बल्कि कम उम्र की लड़कियों में भी बीयर और सिगरेट पीने का चलन खूब बढ़ रहा है। पिछले कुछ दिनों में मुझे बहुत से ऐसे परिवार मिले जो यह कहते दिखे कि हमने तो अपने बच्चों को इन सब चीजों से बचाने के लिए घर में टेलीविजन नहीं लिया। बच्चों को कंप्यूटर दिला दिया। अब हो सकता है उन्होंने यह सही कदम उठाया हो, किन्तु सिनेमा देखने-दिखाने के चैनल अब इंटरनेट पर भी हैं, जहां सरकार की कोई गाइड लाइन काम ही नहीं करती।

आज समाज को तीन चीजें आगे लेकर बढ़ रही हैं साहित्य, धर्म और सिनेमा इंडस्ट्री। देखा जाये तो तीनों ही अपना गैर जिम्मेदाराना व्यवहार अपना रहे हैं। धर्म से जुड़े आर्य समाज जैसे कुछ संगठनों को छोड़ दिया जाये तो आप हरिद्वार जाओ या प्रयागराज – अखाड़ों के बाबाओं के हाथ में चिलम दिखाई देती है। साहित्य भी आज दिन पर दिन विषैला होता जा रहा है। इसके बाद सिनेमा के उदहारण तो सभी लोग जानते है कि एक दौर ऐसा था, जब शराब और उत्तेजक दृश्यों के सहारे दर्शकों को लुभाने की कोशिश होती थी, यहां तक कि बलात्कार को भी इसके लिए कहानी में डाला जाता था। हालाँकि आज बलात्कार के दृश्यों की कमी आई है। ऐसा शराब और नशे के साथ भी हो सकता है। अब प्रश्न यह है कि इसके प्रदर्शन से बचने का रास्ता क्या हो सकता है? पहली बात तो यह कि अपने बच्चों को फिल्मी नायक-नायिकाओं की निजी जिन्दगी के बारे बताना चाहिए कि कितने लोग नशे आदि के कारण अपनी व्यक्तिगत जिन्दगी तबाह किये बैठे हैं। उनकी जिन्दगी की ये हिस्से, हमें पर्दे पर नहीं दीखते हैं। इन फिल्मी सितारों की निजी जिन्दगी देखने के बाद पता चलता है कि फिल्मी दुनिया, उतनी भी रंगीन और खुश नहीं है, जितना ये दिखाई देती है। दूसरा फिल्मकारों को समझना होगा नशा एकमात्र तबाही है और सिनेमा को इसे बढ़ावा नहीं देना चाहिए। नशे के दृश्य न डाले जाएं और गीतों में इसे महिमंडित करने से बचें ताकि आने वाली पीढ़ी इस महामारी से बच सकें। – ***सम्पादक***

शोक समाचार

श्री वीरेश आर्य जी को मातृशोक

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के उप संचालक श्री वीरेश आर्य जी की पूज्य माता श्रीमती बसन्तलता देवी जी का दिनांक 31 अगस्त, 2020 को 76 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। श्रद्धांजलि सभा 10 सितम्बर को उनके आवास सी-61, डी.एल.एफ. निकट भोपुरा गाजियाबाद में सम्पन्न होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 31 अगस्त, 2020 से रविवार 6 सितम्बर, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 03-04 सितम्बर, 2020

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 2 सितम्बर, 2020

आर्य संदेश टीवी चैनल
www.AryaSandeshTV.com

1 से 30 सितम्बर तक प्रसारित होने वाले कार्यक्रम

प्रात: 5:00 जागरण मन्त्र
प्रात: 5:05 शरण प्रभु की आओ रे
प्रात: 6:00 क्रियात्मक ध्यान
प्रात: 6:30 संध्या
प्रात: 6:45 आओ ध्यान करें
प्रात: 7:00 दैनिक अग्निहोत्र
प्रात: 7:30 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (लाइव)
प्रात: 8:30 भजन सरिता
प्रात: 9:00 न्यूज बुलेटिन - भजन उत्सव
प्रात: 10:00 प्रवचन संग्रह
प्रात: 10:30 नव तरंग
प्रात: 11:00 प्रवचन माला
प्रात: 11:30 क्रियात्मक ध्यान
अपरान्ह 12:00 श्री राम कथा
अपरान्ह 12:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
अपरान्ह 1:00 विशेष
अपरान्ह 2:00 आर्य मंच
अपरान्ह 2:30 भजन सरिता
अपरान्ह 3:00 प्रवचन माला
अपरान्ह 3:30 नव तरंग
सायं 4:00 न्यूज बुलेटिन-भजन उत्सव
सायं 5:00 क्रियात्मक ध्यान
सायं 5:30 शरण प्रभु की आओ रे
सायं 6:00 सायंकालीन अग्निहोत्र
सायं 6:30 संध्या
सायं 6:45 आओ ध्यान करें
सायं 7:00 वेदवाणी
सायं 7:30 श्री राम कथा
सायं 8:00 भजन सरिता
सायं 8:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
रात्रि 9:00 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (पुन: प्रसारण)
रात्रि 10:00 शयन मन्त्र
रात्रि 10:05 न्यूज बुलेटिन - भजन उत्सव
रात्रि 11:00 नव तरंग
रात्रि 11:30 प्रवचन माला
रात्रि 12:00 स्वामी देवव्रत प्रवचन
रात्रि 12:30 शरण प्रभु की आओ रे
रात्रि 1:00 विशेष
रात्रि 2:00 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (पुन: प्रसारण)
रात्रि 3:00 आर्य मंच
रात्रि 3:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
प्रात: 4:00 न्यूज बुलेटिन-भजन उत्सव

नोट : आपातकालीन स्थिति में उपरोक्त दैनिक कार्यक्रमों में परिवर्तन किए जा सकते हैं। - ***व्यवस्थापक***

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां! तो

जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उनकी ईमेल आई.डी. लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट/टेलिग्राम द्वारा भेजा जाता रहेगा। - सम्पादक

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह